International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-4 August- 2015 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य

राज बहादुर यादव
शोधार्थी
मोनार्ड विश्वविद्यालय
हापुड़

डॉ0 ऋतु भारद्वाज
शोधनिर्देशिका
मोनार्ड विश्वविद्यालय
हापुड

प्रस्तावना

श्रीमद्भागवतपुराण समस्त पुराणों का शिरोमणि, कवित्वपूर्ण रामायण और महाभारत के समान भारतीय साहित्य को अत्यन्त दूर तक प्रभावित करने वाला गौरवपूर्ण हिन्दू संस्कृति का आदर्श ग्रंथ है। इसमें धर्म, दर्शन, भक्ति–ज्ञान का सर्वग्राहय एवं विशद गम्भीर चित्रण किया गया है। धर्म की जैसी रसात्मक अनुभूति इस ग्रन्थ से होती है वैसी अन्यत्र नहीं। वस्तुतः श्रीमद्भागवतपुराण की रचना का उद्देश्य नैष्कर्म्य धर्म का निरूपण करना है।

मुख्यतः पुराणों का विषय इतिहास प्रसिद्ध है श्रीमद्भागवत पुराण में भी इतिहास प्रसिद्ध राजाओं के चरित्र से सम्बन्धित घटनाएं वर्णित हैं एवं भगवतविषयक रूप का प्रतिपादन करने के कारण घटनाओं का एक बहुत बड़ा भाग भगवान श्री कृष्ण से सम्बन्ध रखता है। इस दृष्टि से भागवत के घटनाक्रम को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–भगवद् सम्बन्धी घटनाक्रम तथा सामान्य घटनाएं। भगवद् सम्बन्धी घटनाओं का सम्बन्ध प्रमुख पात्र श्रीकृष्ण और दैविक कोटि के अन्य पात्रों की घटनाओं से है।

पुराणों की अनादिता, प्रमाणिकता तथा मंगलमयता का स्थल–स्थल पर उल्लेख है और वह सर्वथा सिद्ध एवं यथार्थ है। जो बात वेदों में सूत्र रूप से कही गयी है, वहीं पुराणों में विस्तार रूप से वर्णित है। पुराणवर्णित प्रसंग काल्पनिक नहीं हैं, बल्कि वे सर्वथा सत्य ही हैं। यह बात अवश्य है कि हमारे ऋषि प्रणीत ग्रंथों में ऐसे चमत्कारपूर्ण, प्रसंग हैं कि जिनके आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों ही अर्थ लिये जा सकते हैं। अतः पुराणों की पृष्ठभूमि वास्तव में दार्शनिक ही हैं।

कला, इतिहास, आख्यान सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की साहित्य धारायें प्राचीनकाल से प्रवाहित होती आ रही हैं। विशाल संस्कृत साहित्य में से यदि पुराणों को निकाल दें तो उसकी विपुलता में निश्चय ही कमी आ जाएगी। तन्त्र–मन्त्र साधना हो या परलोक–विज्ञान अथवा कर्म–रहस्य या कर्म–फलनिरुपण, तीर्थ–रहस्य और तीर्थ–माहात्म्य एवं तीर्थों का इतिहास, व्रत–उपवास आदि का ज्ञान हमें इन्हीं पुराणों की कथाओं का अध्ययन–श्रवण एवं पठन करने से ही प्राप्त होता है। अतः हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि पुराणों की पृष्ठभूमि मूलतः दार्शनिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक तीनों ही हैं।

नैतिक विश्लेषण

वर्तमान सामाजिक मूल्यों में नैतिक शिक्षाओं की कमी का प्रमुख कारण है भौतिक आमोद–प्रमोद तथा भोग विलास की पाश्चात्य संस्कृति का दिन–प्रतिदिन बढ़ता हुआ प्रभाव। इसे हम आसुरी गुणों की वृद्धि तथा दैनिक सम्पदा के प्रति उपेक्षा भी कह सकते हैं। श्रीमद्भागवत के चतुर्थ स्कन्ध में उत्तानपाद है तथा जीवमात्र की दो पत्नियाँ होती है। सुरूचि और सुनीति। मनुष्य मात्र को सुरूचि ही प्रिय लगती है। इन्द्रियाँ जो भी माँगे उन विषयों का उपभोग करने की इच्छा ही सुरूचि है। सुरूचि का अर्थ है–वासना। मन को, इन्द्रियों को जो अच्छा लगता है वही मनुष्य करने लगता है। वह न तो शास्त्र से पूछता है और न ही सन्तों से। जिसे रूचि प्रिय है उसे नीति प्रिय नहीं लगती। नीति भले ही विरोध करे किन्तु इन्द्रियाँ तो स्वभावतया विषयों की ओर ही दौड़ती हैं। जीव वासना के अधीन होकर विलासी जीवन जीना चाहता है। वह सोचता है कि सुरूचि के अधीन रहने से उत्तम फल मिलेगा। इसी से सुरूचि के पुत्र के नाम उत्तम हैं। ईश्वर के दास होने पर ईश्वर स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाएगा। उसके साथ ही, नीति के अधीन रहकर जो पवित्र जीवन जीता है, उसी को ईश्वर का ज्ञान मिलता है। सुनीति से ध्रुव मिलता है। ध्रुव का तात्पर्य है–अविनाशी। अनन्त सुख का ब्रह्मानन्द का कभी विनाश नहीं होता। जो नीति के अधीन रहेगा उसे ध्रुव सा ब्रह्मानन्द प्राप्त होगा। अखण्ड एक रस का स्रोत तो स्वयं आत्मतत्व ही है।

श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

श्रीमद्भागवतपुराण के अन्तर्गत जो शिक्षा व्यवस्था हमें दृष्टिगोचर होती है उसके अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. वैयक्तिक उद्देश्य, 2. सामाजिक उद्देश्य

(1) वैयक्तिक उद्देश्य–यह वह उद्देश्य हैं जिनसे व्यक्ति विशेष को अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। वैयक्तिक उद्देश्यों के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति में निम्न क्षमताएं विकसित की जा सकती हैं–

1. **बौद्धिक विकास का उद्देश्य**–श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार बौद्धिक विकास के उद्देश्य की प्राप्ति से व्यक्ति को अनेक कलाओं में पारंगत किया जा सकता है–

(क) पहेली बूझना, (ख) भुजबल, (ग) गुप्त भाषा ज्ञान, (घ) विदेशी भाषाओं का ज्ञान, (च) आशु काव्य क्रिया

2. **शारीरिक विकास का उद्देश्य**–इस उद्देश्य के द्वारा व्यक्ति में शारीरिक बल विकसित करना है। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही बेहतर समाज के निर्माण में योगदान दे सकता है। श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार शारीरिक विकास का उद्देश्य विकसित करने के लिए निम्न गुणों का निर्माण किया जाना चाहिए।

(क) व्यायाम, (ख) रस्साकशी, (ग) कुश्ती

3. **संवेगात्मक विकास**–प्रत्येक व्यक्ति संवेदनशील होता है। कुछ में यह गुण अधिक होता है। संवेदनाओं पर नियन्त्रण करना प्रत्येक व्यक्ति द्वारा भिन्न–भिन्न तरीकों को अपना कर ही सम्भव है। श्रीमद्भागवतपुराण में इससे सम्बन्धित जो तथ्य मिलते हैं वह इस प्रकार हैं–

(क) प्राणियों पर दया व शिष्टाचार, (ख) परोपकारिता, (ग) सहनशील, (घ) निःस्वार्थ सेवा

4. **मानसिक विकास का उद्देश्य**–मानसिक विकास भी उतना ही आवश्यक है जितना कि शारीरिक रूप से विकसित होना। मानसिक स्वास्थ्य में त्रुटि आने से व्यक्ति अनेक प्रकार की मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हे सकता है यथा–अनिद्रा, दुःश्चिन्ता, मनो शारीरिक संरचना में गड़बड़ी आदि। श्रीमद्भागवत के अनुसार मानसिक विकास का लक्ष्य निम्न क्षमताओं को अर्जित कर किया जा सकता है।

(क) काव्य समस्या–पूर्ति, (ख) वास्तुकला द्वारा मानसिक शान्ति, (ग) भविष्य कथन, (घ) अभिधान कोष ज्ञान

(2) सामाजिक उद्देश्य–ये वह उद्देश्य हैं जो समाज में रहने वाले व्यक्तियों के सम्मिलित प्रयास से प्राप्त होते हैं। सामाजिक लक्ष्यों के द्वारा निम्न क्षमताओं का विकास होता है–

(1) नेतृत्व क्षमता का विकास, (2) समायोजनशीलता का विकास, (3) संस्कृति का संरक्षण

श्रीमद्भागवतपुराण में नेतृत्व क्षमता का विकास अनेक प्रकार से दृष्टिगत है–

(क) अपनी बातों से दूसरों को प्रभावित करना। (ख) अपनी बात जनहित को ध्यान में रखकर प्रस्तुत करना। (ग) जनता को साथ लेकर चलना। (घ) जनता के लिए आदर्श नेता का स्वरूप प्रस्तुत करना। (ङ) अपने जीवन में सादगी अपनाते हुए सदैव उच्च विचारों को अपना आदर्श बनाना।

(2) समायोजनशीलता का विकास

(1) व्यक्ति को सर्वप्रथम व्यक्तिगत समायोजन करना चाहिए। (2) इसके बाद व्यक्ति को सामाजिक समायोजन करना चाहिए। (3) अन्ततः व्यक्ति को अपने व्यवसाय के साथ समायोजन करना चाहिए।

(3) संस्कृति का संरक्षण–श्रीमद्भागवतपुराण द्वारा हमें अपनी प्राचीन संस्कृति के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है इसके अन्तर्गत निम्न बातें आती हैं:

(1) मन्त्र विद्या का ज्ञान, (2) रहन–सहन का ज्ञान, (3) प्राचीन साहित्य का ज्ञान, (4) यम–नियम का ज्ञान

महर्षि वेदव्यास ने अपने सम्पूर्ण साहित्य के द्वारा विशेषतः श्रीमद्भागवतपुराण के माध्यम से उस समय का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया है। इनके द्वारा हमें विभिन्न प्रकार के मन्त्रों द्वारा यथेष्ट फल प्राप्ति, सात्विक जीवन, बड़ों का आदर, भ्रातृ–प्रेम, मर्यादा पालन, कर्म में दृढ़ होना, भक्ति योग, ज्ञान–योग आदि की शिक्षा दी गई है। श्रीमद्भागवतपुराण में यम तथा नियम दोनों के बारह–बारह भेद बताए गए हैं।

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य के साथ–साथ श्रीमद्भागवतपुराण के आधार पर 'साध्य' और 'साधन' दो प्रकार के उद्देश्य भी कहे जा सकते हैं। कहा जा सकता है कि वैदिक काल से लेकर महाभारत एवं पौराणिक काल तक शिक्षा का उद्देश्य/लक्ष्य 'मोक्ष–प्राप्ति' था। व्यक्ति अनेक विद्यारूपी साधन अपना कर अपने 'साध्य' तक पहुँचने का प्रयास करता था। इसके लिए अनेक प्रकार की विद्या एवं शास्त्रों का अध्ययन तथा अध्यवसाय के साथ तर्क, शास्त्रार्थ तथा अन्य अनेक ऐसे साधन थे, जिनको अपना कर वह सिद्धि प्राप्त करता था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि श्रीमद्भागवतपुराण शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा ग्रन्थ है जिसके माध्यम से शिक्षा के सभी उद्देश्य प्राप्त होते हैं। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में यदि आकलन करें तो हम पायेंगे कि श्रीमद्भागवतपुराण के आधार बालक का चहुमुँखी विकास एक श्रेष्ठ नायक, कर्मवीर नायक तथा कर्त्तव्यनिष्ठ नेता के रूप में हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्भागवतपुराण मूल प्रति गीता प्रेस, गोरखपुर
2. कल्याण भागवत अंक गीता प्रेस गोरखपुर
3. दासगुप्त एस0 एन0 ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन फिलासफी, भाग–1, कलकत्ता, ओरियन्ट बुक कम्पनी, 1947।
4. मुकर्जी और ओड भारतीय शिक्षा–जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1989।
5. मिश्र उमेश भारतीय दर्शन, मेरठ साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, 1982।
6. सेठ, कीर्ति देवी भारतीय शिक्षा दार्शनिक, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर, 1989।
7. सिद्धान्तालंकार सत्यव्रत आर्य संस्कृति के मूल तत्व, मथुरा, बांकेबिहारी मुद्रणालय, मथुरा, 1988।
8. सांकृत्यापन राहुल दर्शन–दिग्दर्शन, प्रयाग, त्रिवेणी, प्रकाशन, 1972।
9. शर्मा रामनाथ तर्क शास्त्र, मेरठ केदारनाथ, रामनाथ 1976–77।
10. यास्क निरुक्त, पंजाब विश्व विद्यालय, लाहौर 1934।
11. रावत प्यारेलाल भारतीय शिक्षा का इतिहास, आगरा, रामप्रसाद एंड संस, 1972।